मनोज
चित्र
कथा
मूल्य 4.00
खूनी हवेली
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
राम-रहीम
मनोज
कॉमिक्स
TRISHUL
COMICO.

राम-रहीम

लेखक:- बिमल चटर्जी.

चित्रांकन:-त्रिशूल कॉमिको आर्ट.

आपने पिछले दो अंकों "भटकती आत्मा" और "आत्मा का प्रतिशोध" में पढ़ा कि एक रात जब रहीम दूसरे शहर से अपने शहर लौट रहा था तो उसे कामनी नाम की रहस्यमयी युवती मिली। अगली रात वह रहीम को पास ही की एक हवेली में बने तहखाने में ले गई और वहां उसने रहीम को एक ताबूत में रखी एक जली लाश दिखाई। उस लाश को देखने के बाद रहीम बेहोश हो गया और उसी रात शहर की दो जानी-मानी हस्तियों का एक भयानक इंसान ने जिसकी शक्ल-सूरत रहीम से मिलती-जुलती थी, खून कर दिया।

उन दिनों राम अपने माता-पिता के साथ बाहर गया हुआ था। जब वह वापस अपने घर लौटा तो चीफ मुखर्जी ने उन दो खूनों का केस उसके सुपुर्द कर दिया। राम खून की छानबीन में जुट गया। इस बीच कुछ खून और हुए और हत्यारा वही भयानक इंसान था तथा जितनी हत्याएं हुईं, वे भी शहर की मानी हुई हस्तियां थीं। छानबीन करने के दौरान राम को रहीम पर संदेह हुआ। राम-रहीम पर नजर रखने लगा। एक रात उसी जले हुए भयानक इंसान ने राम पर भी आक्रमण किया, लेकिन राम बच गया और उस भयानक इंसान का पीछा करता हुआ उस हवेली में जा पहुंचा। वहां राम की मुलाकात कामनी से हुई। जब राम ने उससे सवाल किये तो वह उसे एक कहानी बताने लगी।

वह कहानी क्या थी और आगे क्या होता है, यह जानने के लिये प्रस्तुत चित्रकथा पढ़ें:-

हां, मैं ठीक कह रही हूं और यह तुम जिस जले हुए भयानक किशोर को देख रहे हो, यह मेरा छोटा भाई कुन्दन है। किसी समय देखने में यह अति सुन्दर था, लेकिन इसे इस हालत में पहुचांने वाले कुछ दरिन्दे डाकू थे...

...और यह है हमारा वफादार नौकर कालमेघ, जो उस समय हमें बचाते हुए ही उन डाकुओं के हाथों मारा गया था। यह भी आज तक मेरे साथ प्रतिशोध की ज्वाला में जल रहा है...

...अब सुनो कि मैंने उन लोगों के कत्ल क्यों कराए और तुम्हें भी क्यों मारना चाहती हूं...

...आज से सौ साल पहले की बात है। जब आस-पास यह सुन्दर सा दिखाई देने वाला तुम्हारा शहर दूर-दूर तक बहुत से छोटे-बड़े गांवों में बंटा हुआ था और यह हवेली जो अब खण्डहरों में बदल चुकी है, इसी तरह शान से सर उठाए खड़ी थी तथा मेरे पिता ठाकुर शमशीर सिंह का नाम दूर-दूर तक आदर से लिया जाता था...

...उस समय एक बेरहम डाकू जोरावर सिंह का आतंक हमारे व आस-पास के गांवों में बुरी तरह छाया हुआ था। उसके दल में उस समेत केवल तेरह निर्दयी इंसान थे...

...एक बार उसने अपने साथियों के साथ हमारी हवेली पर धावा बोला...
घेर लो हवेली को चारों ओर से और जो भी मुकाबला करने की कोशिश करे, उसे कुत्ते की मौत मार डालो।
जो आज्ञा सरदार!
गजब हो गया मालिक! डाकू जोरावर और उसके आदमियों ने हवेली को चारों ओर से घेर लिया है और भीतर घुसने की तैयारी कर रहे हैं।
क्या?
कालमेघ! तुम जल्दी जाकर कारिन्दों को मुकाबला करने के लिये तैयार होने का आदेश दो!
जो आज्ञा मालिक!
शान्ती, तुम बच्चों के साथ तहखाने में चली जाओ। तब तक वहां से बाहर मत आना, जब तक मैं कहूं।
ठीक है स्वामी! आओ बच्चो मेरे साथ।
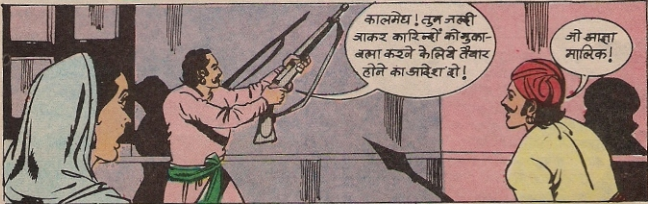
आज मैं इस कम्बख्त का किस्सा हमेशा के लिये खत्म करके ही रहूंगा। सारे गांव वाले इससे त्रस्त हैं।

...हमारे आदमियों ने जोरावर और उसके साथियों का मुकाबला करने की पूर्ण कोशिश की...
धांय धांय
उफ!
आह!
...लेकिन एक-एक कर वे सभी मारे गये...

...जब वे हवेली में प्रविष्ट होकर हमें कैद कर, खूब लूट-पाट कर चुके...
सरदार, ठाकुर की सारी दौलत तो हमने इन थैलियों में भर ली है। अब इन लोगों के लिये क्या आज्ञा है?
खत्म कर दो इन तीनों बाप, बेटे और ठाकुर की पत्नी को...

...तब तक मैं इस छोकरी के साथ दूसरे कमरे में दिल बहलाता हूं। मेरे बाद तुम मौज उड़ाना। हा...हा...हा...!
नहीं...ई... छोड़ दो मुझे!

कुत्ते, कमीने, रुक जा, वरना मैं तुम्हारी बोटी-बोटी नोच डालूंगा!
नहीं... नहीं... नहीं... छोड़ दो मुझे!
मेरी बच्ची!
दीदी!

...उसके बाद...

आह!

पिताजी! माँ!

हाय!

आ...ई...हाय...

हाय!

हा... हा... हा... तुम्हारे मां-बाप तो गये काम से। अब यदि तुम अपनी भलाई चाहती हो तो जिद छोड़ दो, वरना...।

छोड़ दे- छोड़ दे मुझे नीच, कमीने, शैतान!

ओह! इन कुत्तों ने मेरे मां-बाप को मार डाला और दीदी की इज्जत खतरे में है...

...मुझे राखी की लाज रखनी ही होगी, लेकिन कैसे? इन्होंने तो मुझे भी चारों तरफ से घेर रखा है और मुझे मारने की तैयारी कर रहे हैं। हे ईश्वर, क्या करूँ मैं?

चलो, अब इस छोकरे को भी खत्म कर दो।

...तभी कालमेघ, जो किसी तरह जोरावर के साथियों के हाथों मरने से बच गया था, डाकुओं पर काल बनकर टूट पड़ा...

मौका अच्छा है। मुझे दीदी की मदद करनी चाहिये!

...परन्तु शीघ्र ही कालमेघ उनके साथियों के हाथों मारा गया...

आ...ई...ई...

अरे, वह छोकरा कहां गया? ढूंढ़ो उसे, वरना सरदार हमें कच्चा चबा जायेगा।

...जबकि उस समय मेरा भाई कुन्दन साक्षात् भगवान् के रूप में मेरी मदद को आ पहुंचा था...

हरामजादे, छोड़ दे मेरी दीदी को, वरना मैं तेरे टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा।

भइया, मुझे बचाओ इस शैतान से!

ओह! तुम!

लड़के, क्या तुझे अपनी जान प्यारी नहीं! फैंक दे तलवार और भाग जा यहां से।
कुत्ते, मैं भागने के लिये नहीं, बल्कि अपने मां-बाप की जान का बदला लेने आया हूं।

ले सम्भाल अपनी गर्दन को!
अब तू मेरे हाथों नहीं बचेगा!

भइया बचो!
ओह!

छोड़ दो मेरे भइया को... छोड़ दो!
हा...हा... हा... बिल्कुल ठीक समय पर आये साथियो! साला कवाब में हड्डी बनकर आ टपका था...

...डाल दो इसे उस जलते हुए अतिशदान में, ताकि आग में मुर्गे की तरह भुनता हुआ यह अपनी आंखों से अपनी बहन की इज्जत लुटती हुई देख सके।

आह! छोड़ दो मुझे!

हा... हा... हा...!

नहीं-नहीं, छोड़ दो मेरे भइया को जोरावर। तुम जैसा कहोगे, मैं वैसा ही करूंगी।

वह तो तुम्हें करना ही होगा रानी, लेकिन उस समय तुम्हारा भाई जिन्दा नहीं होगा।

नहीं-नहीं, ऐसा जुल्म मत करो। मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं।

...परन्तु उन नृशंसों को मेरी गिड़गिड़ाहट पर जरा भी रहम नहीं आया...

नहीं... भइया!

हा... हा... हा...

... मेरे भाई को आग में झोंकने के बाद ...
हा... हा... हा...!
बचाओ!

दीदी... आह!
कम्बख्त में अभी भी दम-खम बाकी है। ले!

... और कुछ देर बाद ...
अब चलो, थैलियां उठाओ और यहां से निकल चलो। पुलिस आती ही होगी।
लेकिन सरदार, इस लड़की का क्या करें?
बेचारी ने हमारा दिल बहलाया है, इसलिए इसे मत मारो। स्वयं ही आत्महत्या कर लेगी। हा... हा... हा...!

द... दी... दी...!
ओह! भइया!

त... तुम्हें... तुम्हें कुछ नहीं होगा भइया! मैं... मैं तुम्हें अभी किसी वैद्य के पास लिये चलती हूं।
कोई फायदा नहीं होगा दीदी। मैं कुछ ही क्षणों का मेहमान हूं, लेकिन मरने के बाद भी मुझे इस बात का अफसोस रहेगा कि राखी की लाज नहीं रख सका मैं...

...अपनी दीदी की उन दरिन्दों से रक्षा न कर सका। उसकी इज्जत नहीं बचा सका। लेकिन तुम मुझसे वायदा करो दीदी कि तुम जीवित रहकर उन दरिन्दों से हम सबकी मौत का बदला लोगी। उन कुत्तों को एक-एक कर मौत के घाट उतारोगी। मुझे वचन दो दीदी, व... वरना मेरी आत्मा को कभी शान्ति नहीं मिलेगी।

मैं... मैं तुम्हें वचन देती हूं भइया कि मैं तुम्हारे और माता-पिता के हत्यारों से अवश्य बदला लूंगी।
आह! अब मैं चैन से मर सकूंगा। अच्छा दीदी, मैं जा रहा हूं। अपने भाई को क्षमा कर देना। विदा दीदी!
नहीं-नहीं, तुम मुझे छोड़कर नहीं जा सकते।

...परन्तु कुन्दन ने दम तोड़ दिया...
भइया...आह! तुम भी मुझे छोड़कर चले गये!

...काफी देर तक रोने-धोने के बाद मैंने कुन्दन की लाश पर एक विशेष प्रकार का रसायन लगाया और उसे हवेली के ही एक गुप्त तहखाने में ले जाकर एक ताबूत में रख दिया, ताकि उसकी लाश सदियों तक गले-सड़े नहीं...
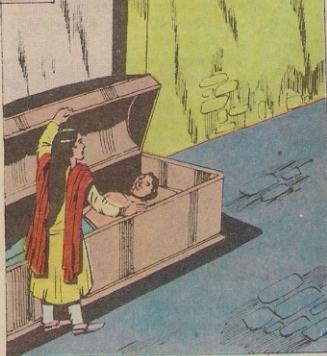
...उसके बाद मैंने अपने वफादार नौकर कालमेघ की लाश को भी एक अन्य तहखाने में रख दिया। चूंकि जोरावर सिंह का आतंक पूरे गांव में छाया हुआ था, इस लिये गांव के किसी भी आदमी ने मेरे माता-पिता का अंतिम क्रिया-कर्म कराने में मेरी कोई मदद नहीं की। लिहाजा उनका क्रिया-कर्म मुझे स्वयं अपने ही हाथों से हवेली के भीतर ही करना पड़ा...

...लेकिन मैंने अपने भाई को जो वचन दिया था, उसे पूरा न कर सकी। माता-पिता और भाई की मौत ने मुझे बिल्कुल तोड़कर रख दिया था, इसलिए एक रात...
बस मैं इस हवेली में और ज्यादा दिन तक घुट-घुटकर नहीं जी सकती। मुझे माफ कर देना भइया। मैं तुम्हें दिया वचन निभा नहीं सकी।

...और मैंने फांसी का फंदा अपने गले में डाल आत्महत्या कर ली...
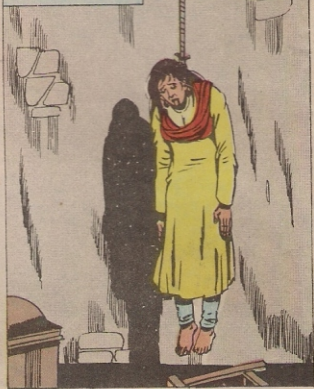
...परन्तु मरने के बाद भी मेरी आत्मा को शांति नहीं मिल सकी और मैं प्रतिशोध की ज्वाला में प्रेतनी बनकर इसी हवेली में भटकने लगी। कालमेघ की आत्मा को भी मुक्ति नहीं मिल सकी थी। अतः वह भी प्रेत बनकर मेरे साथ था...
मैं बदला लूंगी। खून का बदला खून से लूंगी।

...प्रेतनी बनने के पश्चात् मैंने और कालमेघ ने उन हत्यारों से बदला लेने की बहुत कोशिश की, लेकिन शरीर न होने के कारण हम सफल न हो सके। क्योंकि हम आधी रात से भोर होने तक ही शरीर धारण कर प्रत्यक्ष हो सकते थे, जबकि हत्यारे हमारी पहुंच से न केवल बहुत दूर थे, बल्कि हम इस हवेली से दो सौ गज की परिधि से बाहर कुछ भी कर पाने में असमर्थ थे...
कालमेघ! लगता है हमारा प्रतिशोध कभी पूरा नहीं हो पायेगा। काश! एक बार उन दरिन्दों को किसी प्रकार यहां लाया जा सकता!

...धीरे-धीरे समय बीतता गया और उसी के साथ जोरावर और उसके साथी एक-एक कर पुलिस से हुई मुठभेड़ में मरते गये...
आह!

...अन्त में पुलिस के हाथों जोरावर सिंह भी मारा गया और इसी के साथ पूरे गांव में शांति छा गई...

...परन्तु क्योंकि हमारी अन्तिम इच्छा पूरी नहीं हुई थी, इसलिये हम प्रेत बने यहीं भटकते रहे। यहां कई बार लोग रहने के लिये आये, लेकिन हमारे कारण वे यहां नहीं रह पाये और यह हवेली भूतिया कहलाने लगी। वक्त के साथ-साथ फिर यह हवेली भी खण्हर में बदलती चली गई...

...फिर काफी वर्षों बाद उन डाकुओं ने पुन: जन्म लिया और मैं उनकी टोह में लग गई, परन्तु काफी कोशिश करने के बावजूद भी मैं उनसे प्रतिशोध लेने में नाकामयाब रही...
???

...समय बीतता रहा और वे डाकू इस जन्म में बड़े होने लगे। इस जन्म में भी उनके चेहरे पिछले जन्म की तरह ही थे...

...और पूरी एक शताब्दी के बाद मेरी मुलाकात एक रात अपने भाई कुन्दन से हुई, जिसने कि रहीम के रूप में जन्म लिया था।
क्या? रहीम के रूप में!

हां, कुन्दन को रहीम के रूप में देखते ही मेरे दिमाग में उन डाकुओं से बदला लेने की एक योजना आ गई, लेकिन काफी कोशिशें करने के बावजूद भी मैं रहीम को उसके पिछले जन्म की बात याद नहीं दिला सकी...

...तब मैंने एक और युक्ति निकाली। दूसरी रात जब रहीम मुझसे मिलने आया...
लो देखो अपनी लाश!
उफ! नहीं...!

...और जब रहीम एक तेज गंध से बेहोश हो गया...
अपने भूत पूर्व शरीर को पहचानो भइया! क्या तुम पहचान रहे हो कि यह तुम्हारे पिछले जन्म की लाश है!
आहा! बिटिया रानी की योजना सफल हो रही लगती है!
हां दीदी, मुझे कुछ-कुछ याद आ रहा है। यह मेरी ही लाश है। मेरी, यानी पिछले जन्म के कुन्दन की!

शाबाश भइया, तुम अपना नया शरीर छोड़कर इस पुराने शरीर में आ जाओ। तब तुम्हें सब कुछ याद आ जायेगा।
ऐसा ही करता हूं दीदी!

...और कुछ क्षणों बाद रहीम की आत्मा नया शरीर छोड़ कुन्दन के शरीर में प्रविष्ट हो गई...
आहा! मेरा भाई जीवित हो रहा है, लेकिन मैं जानती हूं कि चार घंटे से ज्यादा रहीम की आत्मा उसके भीतर नहीं रह सकेगी।
अब हमारा प्रतिशोध पूरा हो सकेगा!

भोर होने के साथ ही रहीम की आत्मा कुन्दन का शरीर छोड़ अपने नये शरीर को धारण कर लेगी! तब कुन्दन निर्जीव हो जायेगा और रहीम जीवित! खैर, इतना समय मेरे लिये काफी है!

...अपना पुराना शरीर पाते ही कुन्दन ने मुझे पहचान लिया...
दीदी!
भइया!

...उसके बाद मैंने कुन्दन को उन डाकुओं के नये जन्म के बारे में बता
जो कि इस जन्म में शहर के प्रतिष्ठित सेठ, नेता और पुलिस के उच्चा
कारी थे...
भइया, मैं उनसे बदला लेने में असफल रही। अब तुम्हें ही उनसे प्रतिशोध लेना है, वरना मेरी और कालमेघ की आत्मा हमेशा-हमेशा भटकती रहेगी।
तुम चिन्ता न करो दीदी। अब वे शैतान ज्यादा दिनों तक जीवित नहीं रहेंगे...
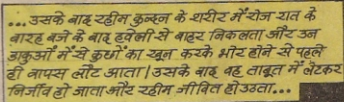
... उसके बाद रहीम कुन्दन के शरीर में रोज रात के बारह बजे के बाद हवेली से बाहर निकलता और उन डाकुओं में से कुछों का खून करके भोर होने से पहले ही वापस लौट आता। उसके बाद वह ताबूत में लेटकर निर्जीव हो जाता और रहीम जीवित हो उठता...

उफ! मैं कहां हूं और मुझे यह अचानक क्या हो गया था?

तुम हवेली में ही हो भइया और स्वस्थ हो। बस तुम्हें थोड़ी देर आराम की जरूरत है। आओ, मैं तुम्हें तुम्हारे कमरे में लिये चलती हूं।

जब सारी कहानी सुनाने के पश्चात् कामनी खामोश हुई —
इसका मतलब यह हुआ कि जिन लोगों का तुमने कुन्दन के हाथों कत्ल करवाया है, वे सभी पिछले जन्म में डाकू थे।
हां, अब केवल दो बचे हैं। जिनमें एक डाकू जोरावरसिंह स्वयं है और दूसरा उसका साथी भीखा।
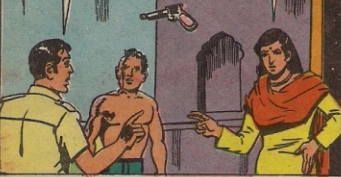
क्या रहीम इस समय भी हवेली में है?
हां, लेकिन निर्जीव! जीवित अवस्था में वह कुन्दन के रूप में तुम्हारे सामने है और इस शरीर में वह तुमसे बिल्कुल अपरिचित है।

विश्वास नहीं होता। रहीम को तो मैं घर पर ही गहरी नींद में सोता छोड़कर आया था।
ही... ही... ही... नींद में क्या, यदि तुम उसे बेहोश भी कर देते तो भी वह मेरी आवाज सुनकर यहां आ जाता, क्योंकि उसके मस्तिष्क पर अब मेरा अधिकार है।

लेकिन तुम मुझे क्यों मारना चाहती हो?
इसलिये कि तुम पिछले जन्म में उन डाकुओं के सरदार, जोरावरसिंह थे...

...मैं तुम्हें सबसे अन्त में मारना चाहती थी, लेकिन तुमने हमारे मार्ग में रुकावट डालकर अपनी मौत को जल्दी दावत दे डाली।
क्या?

तभी—
टन्–टन्–टन्–
ओह!
चार बज गये!

चार बज गये। कुछ ही देर मे उजाला हो जायेगा। फिर हम इसका कुछ नहीं बिगाड़ पायेंगे। भइया, जल्दी से खत्म कर दो इसे।

तुरन्त कुन्दन और कालमेघ भयानक अन्दाज में राम पर झपटे।
राम ने किसी तरह अपने आपको उनके वारों से बचाया और..

...कुन्दन के चेहरे पर एक जोरदार घूंसा जड़ दिया।
धड़ाक्
उफ!
धड़ाम्
आह!
चूँकि कुन्दन इस समय हाड़-मांस में था, इसलिए वह हवा में कलाबाजियाँ खाता हुआ दूर जा गिरा।

उसके बाद राम ने कालमेघ को दबोचना चाहा, लेकिन

बाप रे, यह तो वास्तव में प्रेत है!

हा...हा...हा...!

जल्दी करो, उजाला फैलने वाला है।

इनसे उलझकर मैं पार नहीं पा सकता। अतः भाग ही निकलना चाहिये!

अगले ही पल राम ने द्वार की ओर छलांग लगा दी।

पकड़ो उसे! बचकर न जाने पाये!

कामनी और कालमेघ तो प्रकाश होते ही हवा में मिल गये. लेकिन इसका पीछा नहीं छोड़ूंगा मैं। हो सकता है, यह मुझे वहीं पहुंचा दे, जहां इनकी लाशें अथवा अस्थि-पंजर पड़े हों।

शीघ्र ही—
ओह! वह दीवार पर लगे किसी गुप्त बटन को दबा रहा है।
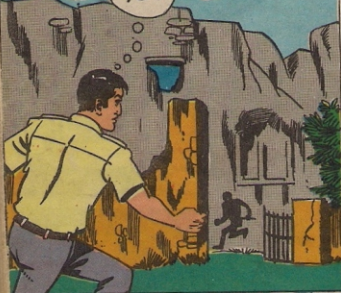
राम का विचार ठीक ही निकला। जहां कुन्दन खड़ा था, वहां एक द्वार प्रकट हुआ और कुन्दन उसके भीतर प्रविष्ट हो गया। राम ने भी भीतर प्रविष्ट होने में देर नहीं लगाई।

वह एक लम्बी-सी सुरंग थी।
ओफ! बहुत गहरा अंधकार है। कुछ दिखाई नहीं दे रहा, लेकिन मजबूरी है। अंदाजे से आगे बढ़ना होगा, वरना वह हाथ से निकल जायेगा।
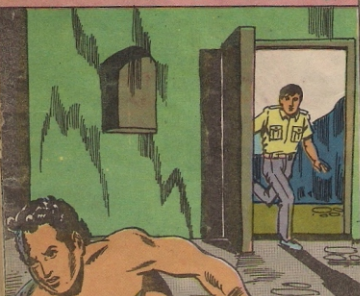
कुछ ही देर बाद —

वह रहा, लेकिन वह जा कहाँ रहा है? कितना आश्चर्य-जनक है यह स्थान! जमीन के भीतर इस तरह के घुमावदार मार्ग मैंने आज तक नहीं देखे।

एक स्थान पर रुककर कुन्दन ने सुरंग की दीवार पर लगे एक बटन को फिर दबाया और द्वार के खुलते ही वह उसके भीतर समा गया।
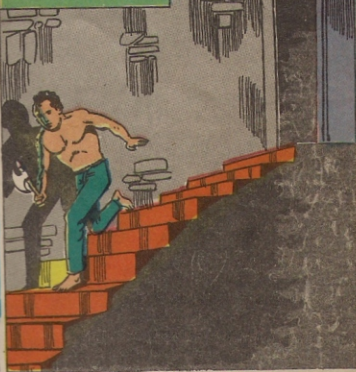
वह इसी द्वार के भीतर गया है, लेकिन दिखाई तो कुछ भी नहीं दे रहा! कहीं ऐसा न हो कि भीतर घुसते ही वह मुझ पर आक्रमण कर बैठे!

तभी उसे जेब में पड़ी टार्च का ध्यान आया और उसने टार्च निकालकर जला ली।

ओह! यह तो नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ हैं। शायद नीचे कोई तहखाना है।

ओ माई गॉड!
उफ, कंकाल! निश्चित रूप से यह कंकाल कामनी का ही होगा! उसने कहा था कि उसने फांसी लगाकर आत्महत्या की थी!
अभी राम उस भयानक तहखाने का निरीक्षण कर ही रहा था कि अंधकार में एक ओर से किसी के कराहने की आवाज सुनकर बुरी तरह चौंक उठा।
आ....ह...!
ओह! कौन है वहां?

...और वह जो द्वार दिखाई दे रहा है, उसके दूसरी तरफ कालमेघ की लाश है।

गुड! तुम ऐसा करो। दोनों की लाशें एक जगह एकत्रित करो तब तक मैं उनकी चिता तैयार करता हूं।

राम ने वहीं पड़े पुराने लकड़ी के समान को तोड़-तोड़ कर तीन चिताएं तैयार कर दीं। रहीम ने कुन्दन और कालमेघ की लाशों को एक-एक चिता पर रख दिया और स्टूल पर चढ़कर छत से कामनी के अस्थि-पंजर को उतारने लगा।
इन दोनों की चिताओं को तो आग दे दूं!

लो भइया, इस प्रेतनी का भी क्रिया-कर्म कर दो!
रख दो इसे भी चिता पर, आज यह हवेली भूत-प्रेतों से मुक्त हो जायेगी।

रहीम ने कामनी के अस्थि-पंजर को भी चिता पर रख दिया, लेकिन जैसे ही राम ने उसकी चिता में आग लगानी चाही, अचानक ही रहीम के कंठ से न केवल किसी हिंसक भेड़िए के समान गुर्राहटें ही निकलनी लगीं, बल्कि उसके चेहरे पर भी भयानक परिवर्तन होने लगे।
गुर्र-र्र-र्र-
ओह! यह अचानक इसे क्या हुआ?
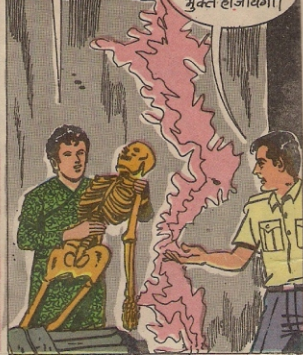
और फिर देखते ही देखते रहीम का चेहरा किसी दरिन्दे के समान भयानक हो उठा।
र... रहीम... त... तुम ठीक तो हो ना?

परन्तु कुछ बोलने की बजाय रहीम ने उस पर भयानक ढंग से आक्रमण कर दिया।

रहीम के कंठ से निकलने वाली आवाज जनानी थी, जिसे सुनकर राम न केवल बुरी तरह चौंका, बल्कि तुरन्त ही उछलकर खड़ा भी हो गया। रहीम ने पुनः उस पर आक्रमण किया...

...परन्तु इस बार राम अपने आपको साफ बचा गया।

फिर रहीम पागलों के समान उस पर बार-बार आक्रमण करने लगा।

लेकिन राम केवल अपने आपको बचाता रहा। वह रहीम पर आक्रमण करने की कोशिश नहीं कर रहा था।

यदि मैंने इस पर आक्रमण किया तो इसे चोट पहुंच सकती है। बस, कामनी की आत्मा से निपटने का एक ही उपाय है कि उसकी चिता को उससे बचते हुए किसी प्रकार अग्नि दे दी जाए!

और कुछ देर तक रहीम के आक्रमण से बचते-बचते अचानक राम ने जलती हुई एक चिता से लकड़ी खींच ली।

बस कामनी, तुम्हारा खेल खत्म हुआ। अब तुम्हें रहीम का शरीर छोड़ना ही होगा।

न...हीं... नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते। मैं तुम्हारा खून पी जाऊंगी।

जब राम हवेली से बाहर निकला तो चारों ओर सूर्य का तेज उजाला फैल चुका था और उसी उजाले के साथ ही सम्पूर्ण हवेली पुनः खण्डहरों में बदल चुकी थी।

ओफ! इस तरह निपटा यह भयानक आत्मा का चक्कर! शुक्र है कि रहीम के साथ-साथ मैं भी बाल-बाल बच गया!

फाटक से बाहर निकलने पर—

इस बुत के भी टूटने से यह साफ जाहिर होता है कि कामनी और कालमेघ की आत्माओं को वास्तव में ही प्रेत योनी से मुक्ति मिल गई है!

एक टैक्सी कर राम, रहीम को लेकर अपनी कोठी पर पहुंचा।

अरे! क्या हुआ रहीम बेटे को?

कुछ नहीं काका, केवल बेहोश है। कुछ देर बाद अपने आप होश में आ जायेगा। बस, ईश्वर का शुक्र करो कि किसी तरह इसे प्रेत जाल से मुक्त करा सका, वरना इस बार तो शायद रहीम से कोई जिन्दा न बचता।

फिर राम ने उसे सारी कहानी कह सुनाई।

फिर कोठी के भीतर पहुंचकर राम ने जैसे ही रहीम को उसके बिस्तर पर लिटाया—

ट्रिन-ट्रिन-ट्रिन-

ओह! शायद चीफ अंकल का ही फोन है!
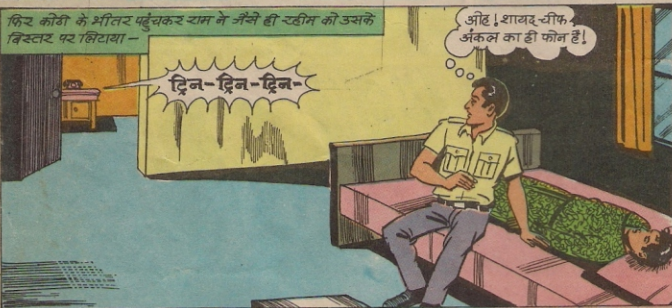
...सुनो, कल रात शान्ती अनाथाश्रम के मैनेजर का खून हो गया है और खूनी वही भयानक शक्लवाला है।

मैं जानता हूं चीफ, लेकिन निश्चिंत रहिये। अब और खून नहीं होंगे और न वह खूनी ही किसी को फिर कभी दिखाई देगा।

क्या मतलब?

आप घर आ जाइये। यहीं पर आपको सारी बात बताऊंगा।

ठीक है। मैं अभी पहुंच रहा हूं!

कुछ ही देर बाद चीफ मुखर्जी कार द्वारा राम के घर पहुंच गये।

अरे! यह रहीम अभी तक सोया हुआ है!

यह सोया हुआ नहीं है चीफ, बल्कि बेहोश है!

फिर राम ने चीफ मुखर्जी को सारी कहानी सुना डाली। सबकुछ सुनकर वे आश्चर्यचकित हो उठे।

निःसन्देह अविश्वसनीय घटना थी यह। यदि कोई दूसरा मुझसे भूत-प्रेत की बात करता तो मैं हरगिज विश्वास नहीं करता। खैर, जो भी हो कम से कम इन खूनों से व्याप्त आतंक तो समाप्त हुआ!

अचानक राम का चेहरा उदास हो उठा।

यह प्रेत जाल तो समाप्त हो गया चीफ, लेकिन मुझे मरते दम तक इस बात का अफसोस रहेगा कि मैं पूर्व जन्म में एक डाकू, लुटेरा, खूनी और बलात्कारी था। शायद कई जन्मों तक प्रायश्चित करने के बाद भी मेरे वे पाप नहीं धुलेंगे

छि:, ऐसा नहीं कहते बेटा। आज जो कुछ तुम देश और मानवता की रक्षा के लिये कर रहे हो, वह सौ जन्मों के पापों को धो देने के लिये काफी हैं। ईश्वर भी शायद तुमसे इस जन्म में यही अपेक्षा करते होंगे।

क्या आप सच कह रहे हैं अंकल?

कुछ दिनों तक तो लोगों को भूत-प्रेतों की उस कहानी पर विश्वास ही नहीं हुआ, लेकिन जब उस दिन से फिर कोई कत्ल शहर में नहीं हुआ और वह भयानक चेहरे वाला इंसान दिखाई न देने के साथ-साथ लोगों को हवेली के खण्डहरों में भुतिया-चमत्कार भी दिखाई नहीं दिये तो सभी राम की भूरि-भूरि प्रशंसा कर उठे।

निःसन्देह राम जैसा बहादुर लड़का जिस देश में जन्म लेगा, उस देश पर कभी कोई खतरा स्थाई रूप से नहीं मंडरा सकता।

सच कहते हो भाई! ईश्वर उसे लम्बी उम्र दे और हमेशा-हमेशा उसे मुसीबतों से बचाये रखे।

समाप्त